

DPN 6802

श्लोक सफू

ŚLOKA SAPHŪ

Title :

Run. No. 7527

Cat. No. 35

Micro. No.

Subject स्तोत्र Hymn

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. / Hindi

Size in cms. 20 X 13.5

Folios 18

Lines (in a page) 17

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

बाबानानि वैद्य

Date: NS / SS / VS / KS 1967

Ruler / place

Baba Nani Baidya.

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

Cover - द ७ साम चैत्र शुदी २ रोज, थो छुन्ड्या दीनक्ष दयेकागु

P.T.O.

श्लोक साधु थो साधु जगतप्रशाद यागु ॥

Beg. श्री गरुडेशाय नमः ॥ ^(१) महाभोगागु ॥

कपूर गौरं करुनावतारं शंसार शारं
भुजगेन्द्र हारं, शदावसन्तं हृदयारविन्दं
नवं भवानि शक्तिं नमामि ॥

धुकिइ दुग्ग श्लोकत -

- | | |
|------------------------|-----------------------|
| २. नारायण यागु | ११. गरुडेशाय यागु |
| ३. चन्द्रेश्वरी यागु | १२. ब्रह्मापराणी यागु |
| ४. सरस्वती यागु | १३. माहेश्वरी यागु |
| ५. नारायण लक्ष्मी यागु | १४. नासः योगागु |
| ६. भोमसेन यागु | |
| ७. श्री कृष्ण यागु | |
| ८. लक्ष्मी देवी यागु | |
| ९. सूर्य यागु | |
| १०. भैरव यागु | |

राग होरी ॥

श्री लाला श्यामाजी से खेनत होरी ॥

६० सालचे त्रिशुदी २ रोज
थोपुदुयादीनशादयेका
गुश्लोकसाफुथोसा
फुजंगत्यशादयागु॥

IN AUSTRIA

देवताकोलेत्र

ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਸਾਖੀ ਮੰਡਲ
ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਸਾਖੀ ਮੰਡਲ
੦੭੨੧

ETS 18 YARDS

000

27

20
15
10
5

1 श्रीगणेशाय नमः ॥ १ ॥ महायोग्याय ॥ ॥
कर्पूरगौरं करुणावतारं शंखशारंगं
जगेंद्रहारं शशवशंतं हृदयाः ॥ ॥
भवभवानिशहितनामानि ॥ ॥ ॥

2 ॥ नागयोग्याय ॥

ओमधेवि नयेद्विष्णुं भोजने च जनार्दनं
॥ सयने पद्मनाभं विवाह्य च पुजां प
ति ॥ युधे च क्रुधारे देवं प्रवाशे च त्रिविक्र
मेनाययनं तनुत्पामे श्रीधारे प्रियशगमे
॥ इत्यप्रेम्परा गोविन्द शंकटे मधुसुद
नं ॥ कानने नारसिंहं पादके जलशा
यनं ॥ जलमधे वाहं च पर्वते रघुनंदनं
गमने वामने चैव शर्वकार्ये शुभाध्वं
षोडशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय ये पठे
त् ॥ शर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोके श
गच्छति ॥ ॥ इति श्रीनागयोग्याय नमः
मा प्रभुम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

इव देवहियाय ॥
रगतवर्णां चतुर्बाहुं बालरूपि महेश्वरि राज
लक्ष्मि वां देहि वन्दे श्वरि तमोस्तुते ॥ ॥
ति श्रीवन्देश्वरि स्तोत्रं समाप्तं ॥ ॥ ॥

४ सात्वतियाय ॥

शुक्लांबुजविचारशारपञ्चामाशां म
हव्यापिनी विना पुस्तकधारि मभयता
जायां धकारापहा हस्ते स्फटिकमालि
कावितधति पञ्चाशने संस्थिता वंदे तां
प्रमेश्वरीं भगवति बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥

॥ इति श्रीसादादेवि स्तोत्रं समाप्तं ॥ ॥

५ ॥ नागयोग्याय ॥

शान्ताकारं भुजगशयनं मेघाणि शुभो
गलक्ष्मिकान्तकमलनयनं योगविशा
नगं मंवंदे विष्णुर्भवमयहरं शर्वलो
के कनार्थ ॥ ॥ इति श्रीनागयोग्याय नमः
स्तोत्रं समाप्तं ॥ ॥ ॥ ॥

६ ॥ भिमशतयागु ॥

भिमरूपं महाक्रोठं एकवर्णस्तुते जल
वायुपूजाये बीएयभीमभैरवायतनो
स्तुते ॥ इति श्री भिमशतस्तोत्रं समाप्तं ॥

७ ॥ नाएयनयागु ॥

नमोलुनताय सहस्रसुतसहस्रपा
दाक्षसिहराहये सहस्रनाम्ने पुरुषाय
सहस्रते सहस्रकोटिगुणाय नमः ॥
॥ इति श्री नाएयनस्तोत्रं समाप्तं ॥

८ ॥ नारायणयागु ॥

कस्तुभ्रतलंकललातपटले वैकुण्ठ
स्थले कोस्तुभंताशायि गजमेढिकंकर
तले वैठुतले कंकनं शर्वांगे हरिचंदनं
चतुर्लसीकण्ठचमुक्तावलिंगोपस्त्रिप
रिवे स्थिता विजयेते श्रीगुणपालकदामनि ॥
॥ इति श्री नारायणस्तोत्रं समाप्तं ॥

९ ॥ श्रीकृष्णयागु ॥

लक्ष्मीकरं शतपत्रं नैत्रं पुन्यैर्दुवचं पुर
दुतमींद्रकांठं मेघां कसरीयगात्रं
वन्दे पवीत्रं वसुदेवपुत्रं ॥ इति श्री कृ
ष्णस्तोत्रं समाप्तं ॥

१० ॥ श्रीरामनारायणयागु ॥

आदौ रामतपोवनादगवतं हत्वा मृगं का
चनं वेदैर्हि हरं नृतायुमरुतशुग्रीवशं
भावनं ॥ बालिनीगृहं शमुद्रतलं लंका
पुरीदाहनं ॥ पञ्चाद्रावराकम्भकराह
नयेतां अरामायनं ॥ इति श्री राम
नारायणस्तोत्रं समाप्तं ॥

११ ॥ लक्ष्मीदेवियागु ॥

त्रैलोक्यपूजिते देवि लक्ष्मी शंशर्भत्रपूज्य
ते पथे पुरुआलक्ष्मिभवेत शेषु त्रदारादि
विहरिता सहस्रकोटिनमोलक्ष्मीदेवि
नमोलुते ॥ इति लक्ष्मीस्तोत्रं समाप्तं ॥

१२ ॥ ~~श्रीगणेशाय नमः~~ ॥

उद्भवेलारुवर्णप्रातिहर्षरूपामये ॥
शहभकेगाप्रकाशेन लुहरीतानमो
लुते ॥ शान्तमुर्तिदिनाथभक्तारक्षेकरु
नामये ॥ इति ध्यात्वा दिनाथभास्वर
त्वनमोलुते ॥ ~~इति श्रीगणेशाय नमः~~
~~मायामयशुभम् ॥~~ ॥ ॥

१३ ॥ ~~श्रीगणेशाय नमः~~ ॥

काकाशकोसमिन्नकोरुहं कापको
शभरा ॥ कोवल्लाकोजनादनकोतारको
हंडुकोदेवाशुभ ॥ १ ॥ कल्यांताभतिन
तप्रभुदीतश्रीशिधिगोश्वरा ॥ कदाना
तकनायेको विजयते देवो महाभैरवम्
॥ २ ॥ इति श्रीमहाभैरवस्तोत्रशान्ता
प्रशम्युर्गशुभम् ॥ ॥ ॥

१४ ॥ शास्त्रतियागु ॥

शास्त्रतिनमोस्तुभ्यंवादेकामरुपीनिवि
द्यालंबोकरूपामीशिधीभक्तमेशादा ॥ १ ॥

पातभोजंगुहनाच वन्देलेवानीपमिमं ॥ १ ॥
प्रथमभारथीनामदीतीयं च शारत्त्वती ॥ २ ॥
त्रीतीयं शारदादेवी चतुर्थं हंशजामीनी ॥ ३ ॥
पंचमं जोगभीष्माता घस्तमं भागेश्वरिति
था ॥ ४ ॥ शप्रमेष्वातकोमारिअस्तमं
दुर्गमीत्रीका ॥ नउभोमेजगतमाताद
शर्मवुल्लचारिनी ॥ ४ ॥ यकादस्याडु
रवाचद्वादम्यावरदायक ॥ यकद्वादश
मानत्रीसंध्यायोजयेत् ॥ ५ ॥ इति
श्रीभारथीनामस्तोत्रसमाप्तं ॥ ॥ ॥

१५ ॥ मणेशाय नमः ॥

श्रीमणेशाय नमः ॥ प्रथमेशारत्त्वदेवीगो
रिपुत्रवीनायेक ॥ भक्त्यायज्ञास्मरेतीत्यं
मायुकामाभसिद्धि ॥ १ ॥ प्रथमं वक्तुं
द्वच हेमप्रहिति यकम् ॥ तृतीयं कुरु
मिदुक्षगजवक्तुं चतुर्थं कम ॥ २ ॥ लंम्बो
दापच्यमच्यमस्तमचिकतमेवच ॥ ३ ॥

नमः भाल एजे दधुवर्णां तथा भमः ॥ ३ ॥
 नवमः भाल वदुर्वा दसमः तु वीनाय कः ॥
 एकादस गनपती द्वादसं तु जनानन ॥ ४ ॥
 ये ते द्वादस नामात्री तस्य ध्येयं पठेत् नरः ॥ ५ ॥
 नववीधु भयं तस्य सर्वस्वीप्ती करं पु
 भो ॥ ५ ॥ विद्यार्थी लभते वीद्या धना
 र्थी लभते धनं ॥ पुत्रार्थी लभते पुत्रं मो
 क्षार्थी चापुत्रा गती ॥ ६ ॥ जप्त्वा रिगत
 पती स्तोत्रं मन्त्री युक्तेन ते जप्ता ॥ लब्ध
 सरे न सीधीं च लभते नात्र संशयः ॥ ७ ॥
 अस्तात्री वृंक्ष जावलेष पितृसमं प्र
 ती ॥ तस्य वीद्या भवेत् सर्वं गते सलो
 प्रसादनः ॥ ८ ॥ इती श्रीनारदपु
 त्रे श्री महागनपती स्तोत्रं संमूलेन
 साधु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

१६ ॥ वृंक्ष जावली ॥

वृंक्ष जावली वृंक्ष जावली वृंक्ष जावली
 नी ॥ चतुर्वर्णा चतुर्वर्णा चतुर्वर्णा चतुर्वर्णा
 नी ॥ १ ॥ वृंक्ष जावली वृंक्ष जावली वृंक्ष जावली
 प्रदायी नी ॥ हंसयुक् वीमानस्था सोम्य
 हृषी पीतामही ॥ २ ॥ पुस्तकं स्वाये माला
 श्व विरदावहे पातनी ॥ पीतपुष्पे रतादे
 वी पीता ह्री पीतवासी नी ॥ ३ ॥ इदं मो
 तरावस्था प्रसागे क्षेत्रवासी नी ॥ पुन
 पाथे स्थिता नीते वृंक्ष शक्ती नमो लु
 ते ॥ ४ ॥ ॥ इती श्री वृंक्ष जावली स्तो
 त्रं समाप्तं ॥ ॥ ॥ ॥

१७ ॥ माहेश्वरीया ॥

माहेश्वरी महादेवी मोहमायाती रंजनी
 ॥ माहावर्जमाहता महाजकारनादी
 नी ॥ १ ॥ होमपुत्री नीवी देहा कपाली
 सीसिले षरि ॥ श्रीलोचनी श्रीशुरश्च अ
 क्षे मालाकमंदलु ॥ २ ॥ नागालंकार

शर्वांगी दक्षिणे नवरुद्रा ॥ श्रुती स्थी
तीर्था नाशाना सर्व व्यापी शुरेश्वर ॥ ३ ॥
श्वेतपुष्पे रता देवी श्वेतांगी श्वेतवासिनी
॥ श्वेतचंदननीपातं च पुता भरत भूषा
ता ॥ ४ ॥ वासनस्या महाक्षेत्रे तालवृ
क्षे नीवासिनी ॥ अग्नीषीठे स्थिता नील
माहेश्वरानमोस्तुते ॥ ५ ॥ ॥ इती
श्रीमाहेश्वरिस्तोत्रं समाप्तं ॥ ॥ ॥

१८ ॥ गणेशायाम् ॥

गणपती बहेरुम्ब विद्युत्पुण्ड्रवीनायेक ॥ दे
विपुत्रमहातेजः महाबलपराक्रम ॥ महो
दरं मरुकायेत्येकं दंतं गजाननं ॥ श्वेत
वर्णं महादिपुः श्रीमेतं ननायेक ॥ अद्य
माहासुगंधश्च दक्षिणे च विधारिनी ॥ प
शुमोदकपार्श्वे च वामो हस्त विधारिनी
॥ ६ ॥ ॥ इती श्रीगणेशस्तोत्रं समाप्तं ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥

१९ ॥ लक्ष्मीयागु ॥

त्रैलोक्यपुत्री ते देवी नमस्ते विष्णुवल्लभे
यथा तो मे वला कृप्ते तथा नवमयि स्थी
एईश्वरी कमला लक्ष्मी श्रुता भूक्ती ह
॥ प्रयाः पद्मालया सस्य दुर्च ॥ श्री पद्म
धात्री दीप्ता दसे तानी नामा नी लक्ष्मी संक
ज्पते यः पठेत् स्थी लक्ष्मी भवेत्तस्य पु
त्रदा तु दीभीत ह ॥ १ ॥ ॥ ॥
ती श्री लक्ष्मी स्तोत्रं समाप्तं ॥ ॥ ॥

२० ॥ गणेशायाम् ॥

नमस्ते नमो नाथानंदि चंदि विधारिनी ॥ नमो हि
क्षिप्रदातारं सोभाग्यं त्वं देहि मे ॥ १ ॥

आवण्ड मंदराकारं ध्यायेत् न चरुचरं तर्पयेत्
श्रीं ते येन तस्मै श्रीगुरुभोजनम् ॥ १ ॥ ॥ ॥
गुरुं श्रीगुरुं विष्णुं गुरुं देवो महेश्वर ॥ गुरुं दे
वो जगत्पति तस्मै श्रीगुरुभोजनम् ॥ २ ॥ ॥ ॥

२१ नारायणाय नमः ॥

ॐ श्रीरवीश्वरी वपुष्यरुक्तपुगे नामैतु नारायणाय
नेताय त्रीपुराज्यतेत्रीभूवने विष्णुसुवर्णाप्र
भो दुर्वास्या नमती भूषण हिरावरावधेरामे
पुगे द्वापरे नित्यं कंजल सैनिर्भकली पुगे मी
ना तुदामोदर ॥ १ ॥ ॥ ११११ ॥ ॥

२२ नारायणाय नमः ॥

ॐ आदोमीनः सोरुपी ॥ वरमथ नवकुः को
मरुपी छतीर्य दैत्यारे नारुपी ही वली मथ
नवरोयामदग्निः सोरुपी रामो लीकावीद
रिवसुतनयवरे बोधिसत्वावतारैः श्री श्री
श्री कलक्यावराणे दशरूपविदीनो माधवो
यै नमो नमः ॥ १ ॥ ॥ ११११ ॥ ॥

राजजसुती ॥ सीवसमातकोदाताको
हीलहीजिगतनेमतइहा कुरु स्वाय

रागहोरी ॥ ॥ श्रीलालासामाजीसेखेलतहोरी ॥
खेलतहोरीवैजा नोरी ॥ श्रीयमुनाजलभातस
वसरिखिमिलीवी चमै राधाजोषी ॥ ताही केवीच
में श्रीगीरीधारी सवमीलीखेलतहोरी ॥ प्रेमपु
यजावतजोरी ॥ श्रीलाला ॥ १ ॥ देखिआनन्दस
वजगमोहे कंगुवा खेलतघरस्यजोरी ॥ भक्ती
कुमारी कहतस्या मसे कृपा को कुरुविहारि
॥ हमहु रवीदीन कृकारि ॥ श्रीलाला ॥ २ ॥

श्रीशिवजीको रागविभास ॥ ॥ नामतुमारेत्रि
लोचनजपतपापविमोचन ॥ कैलाशउपा
विराजितं नदिभृदि सेविते ॥ दशभुजाशो
भाते ॥ आदिदेवमहेश्वरी ॥ नामतुमा ॥ १ ॥
उमरुत्रिशूलधारणी ॥ व्याघ्रचर्मशोभिती ॥
चिताभस्मलेपितभुजीगहा शोभिती ॥ ना
मतुमा ॥ भूतप्रेतविनायक सदा रहतसेवि
ती ॥ नीलकंठधारण ॥ जटा मुकुटशोभिती ॥
नाम ॥ २ ॥ सिरमैगीगाधारणी चूर्णदण्डवि
जिती ॥ जपतनामभक्ति कुमारी चरणपङ्कज
होविती ॥ नामतुमा ॥ ४ ॥ ॥

॥॥ भजन ॥ ॥ अमनी सुत उमवोजन जावली
 भाको ॥ विनवी वी लखिके ॥ भएवत ओं गी
 दोहे ति ॥ ८ ॥ पाय कुर्क प्रभू के अती कृपिण
 गी ॥ ये असमात ॥ अंगी सुत ॥ १ ॥ चला एक
 भेदेवी अचारी आई पल्लु वि ॥ कोये पवन
 सुत ॥ भोय कलातु चली गई निज धाम ॥ अंग
 गी सुत ॥ सागने भैरव को भेजे वात कि वो
 १७ भा ८ ॥ वाई लें कूड के लीका पकू वे डे भिदि

राग रास ॥ ॥ वजेरे वृद्धावन वीस मोहन कि
 ॥ ५८ ॥ सुन केति न सक्ति येन सखा वी कु
 होये प्रतीवदन की वाजेर ॥ १ ॥
 राग उचो गीला ॥ ॥ येतना मन माहन सो
 कहना ॥ ५९ ॥ आदत दीन भाषा भोजन ॥
 भासी मैलो सववाहन ॥ १ ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ नमः मृत्युं जया
 य ॥ ॥ के लारखोत शृङ्ग शूद्र सती कर
 नोवे ॥ तमो गण विहीने तु ज रा मृत्यु विवजो
 त ॥ १ ॥ सर्व तीर्थ स्पर्श धारे सर्व ज्ञान कृता ल
 ॥ कृता जरी पुतो ब्रह्मा ध्यानाशी रं सदा शिव
 म् ॥ २ ॥ पप्रद प्रणतो मूल्या जा नु पाव वती ज
 त ॥ सर्वा र्थ संश्रय धार बहो कपीता म
 द ॥ ३ ॥ ब्रह्मो वा च ॥ ॥ ॥ पाया न दे
 स ची रा गुद तो रु सो भवेत ॥

अथ देवकृत लक्ष्मि लेख प्रारंभः ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ समस्त भगवत्पंक्तम् ॥
श्री लक्ष्मि लेख ॥ ॥ ॥ ॥

20

15

10

5

0

CMS

5

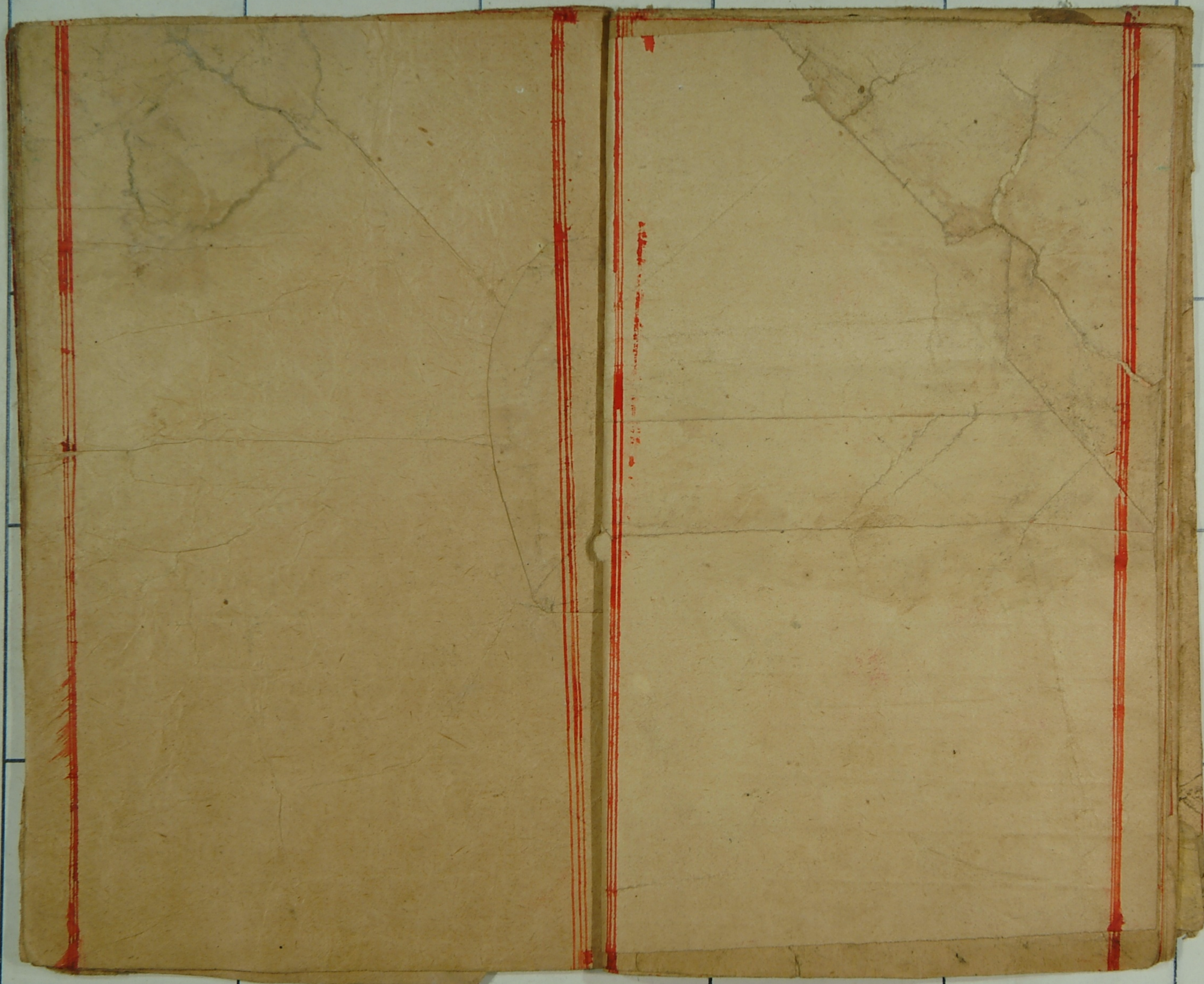
10

15

20

25

30



20

15

10

5

0

CMS

5

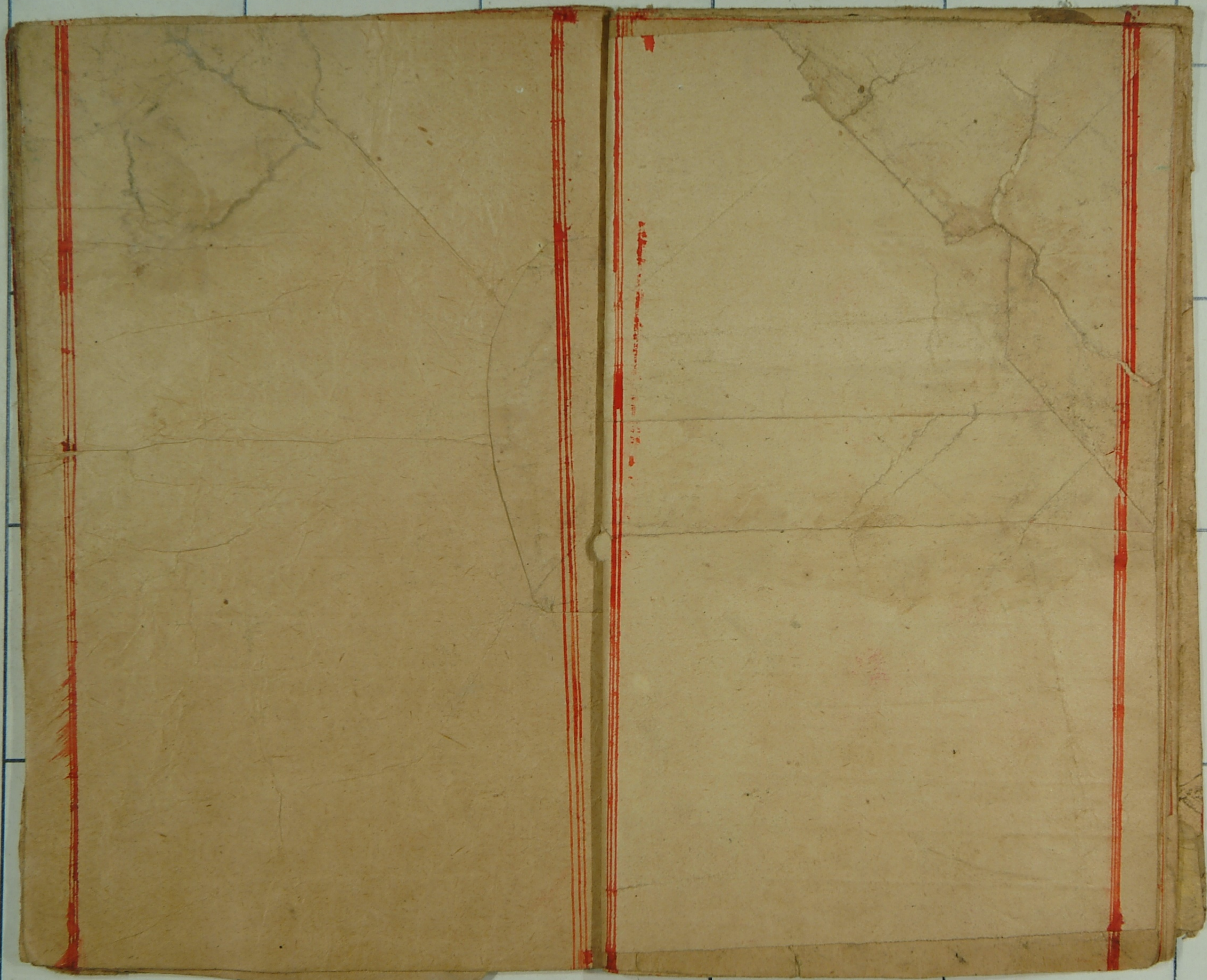
10

15

20

25

30



20

15

10

5

0

CMS

5

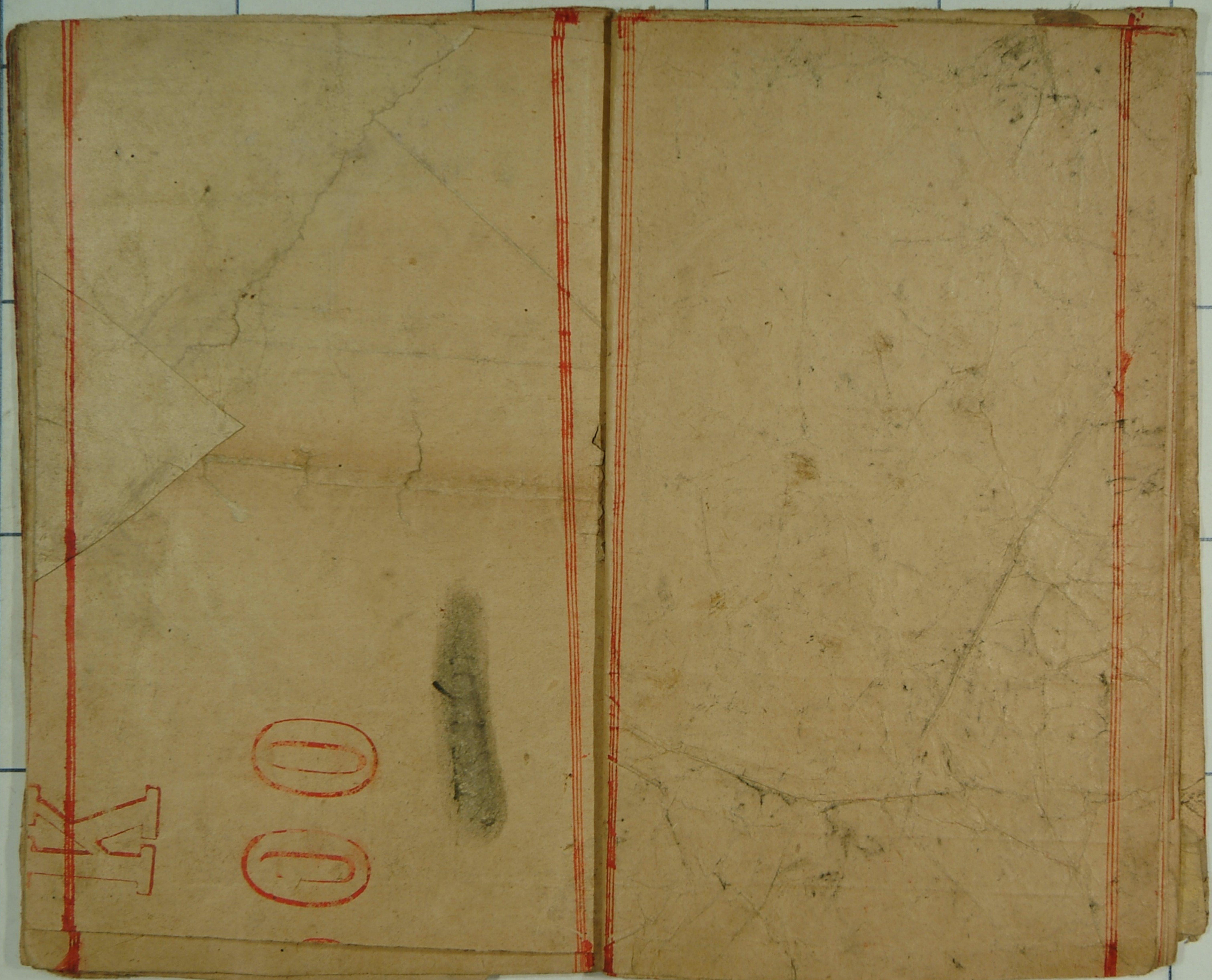
10

15

20

25

30



20

15

10

5

0

CMS

5

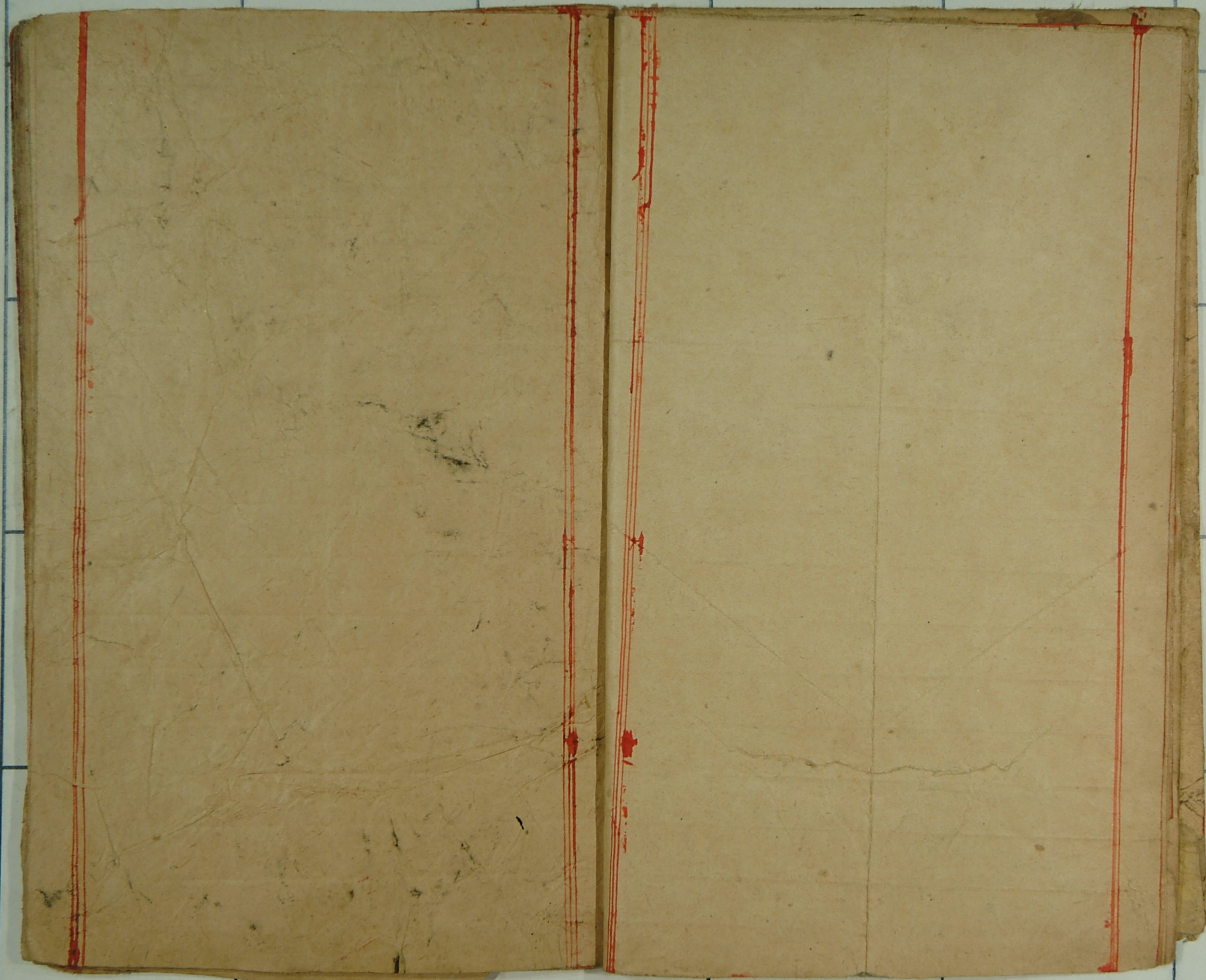
10

15

20

25

30



20

15

10

5

0

CMS

5

10

15

20

25

30

RDS

20

15

10

5

0

CMS

5

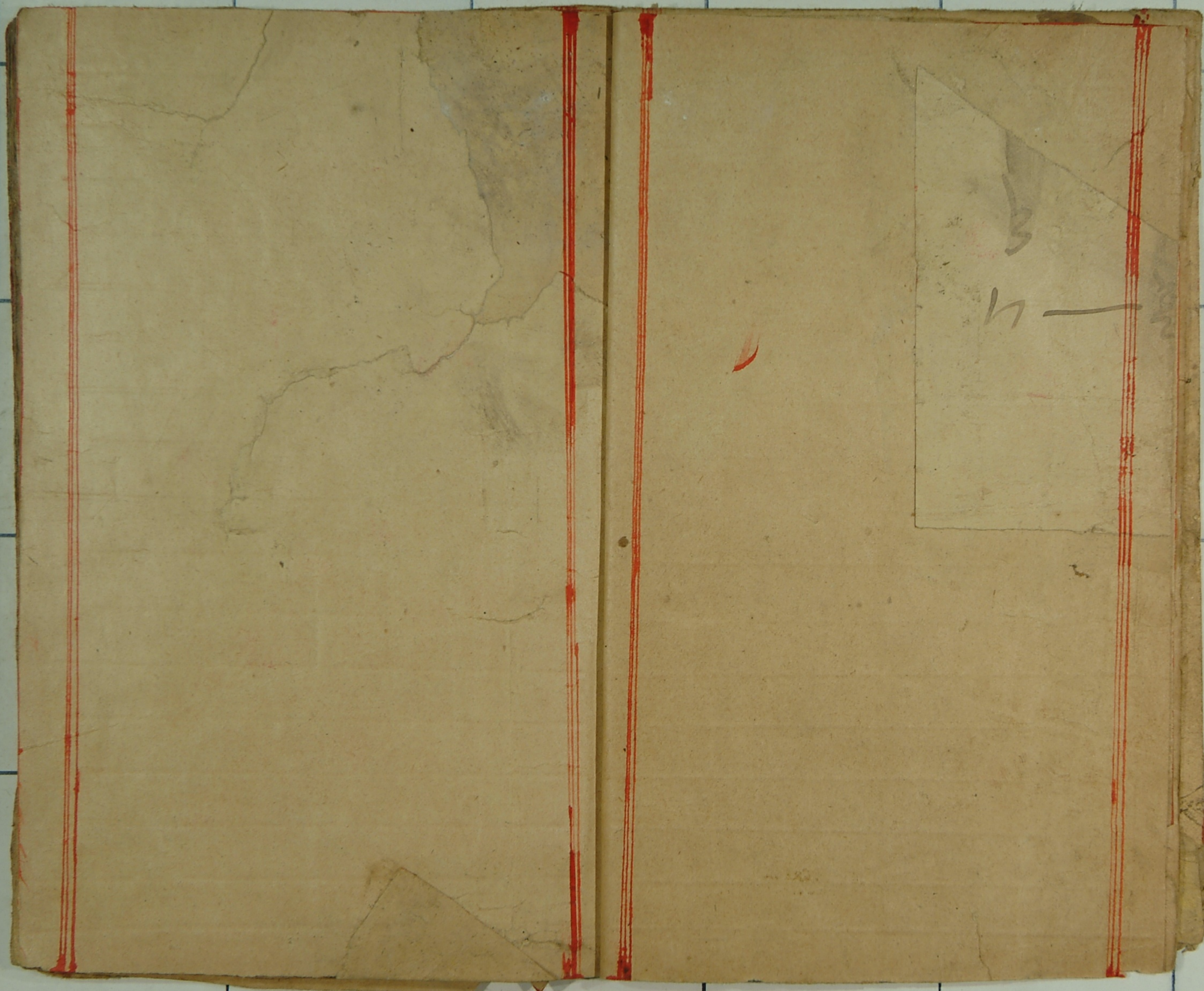
10

15

20

25

30



20

15

10

5

0

CMS

5

10

15

20

25

30



20

15

10

5

0

CMS

5

10

15

20

25

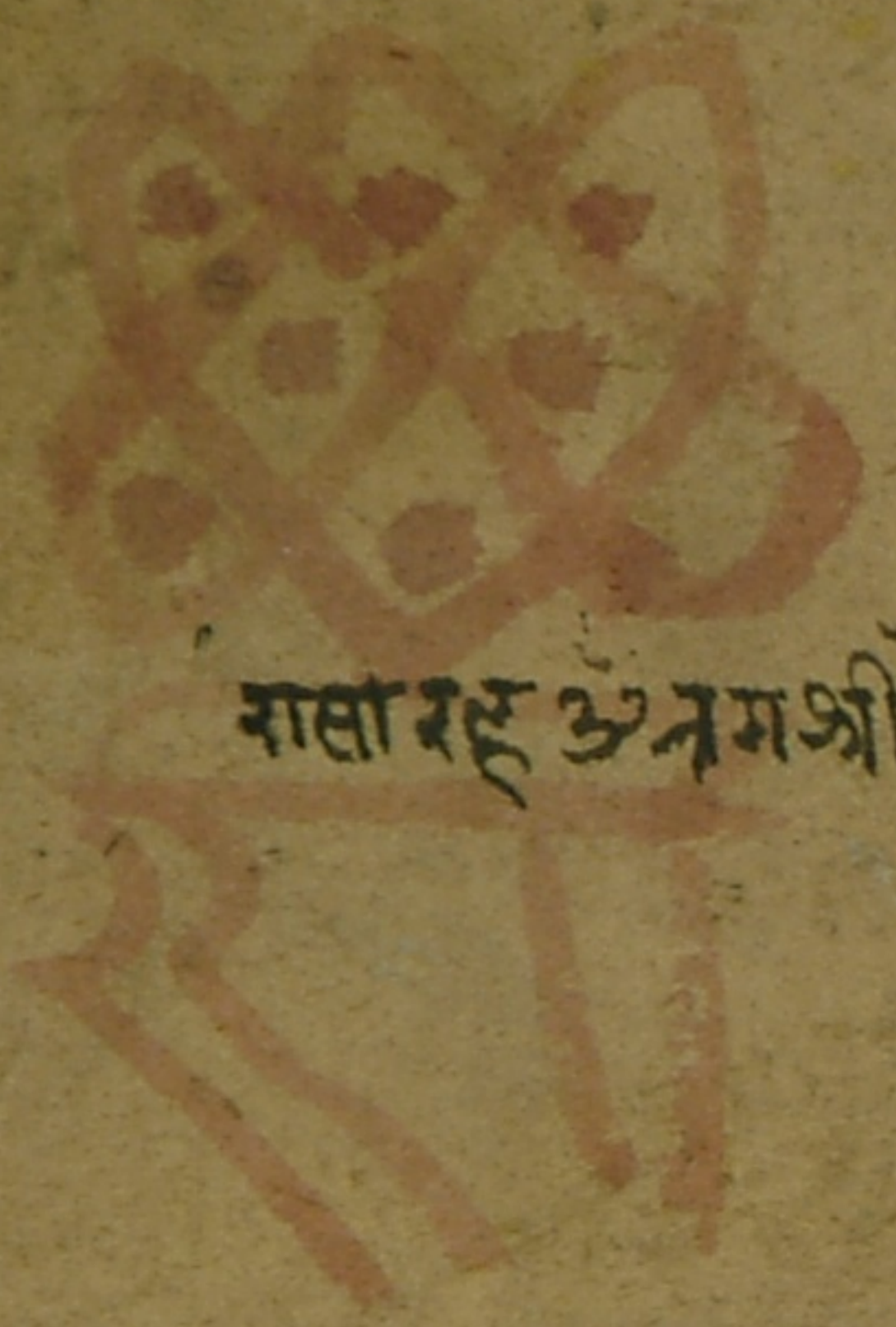
30



श्रीश्वेसूदे

वत्तासएन

श्रीराम
जिशएन
हेक्कह्म



साराह अमश्री गेरु शाप नमः

याकीता